ॐ श्रीदेव्यै नमः ॥ ॐ अधुनाकथयिष्यामि विद्यां मंत्रम
यीं शिवे सहस्राख्याभिधं दिव्यं गायत्रीसाररूपिणी
म् ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च वेदमाताजगत्प्रसूः तस्याना
मसहस्रं ते सदसद्ब्रह्मसाधनम् देवतानां देवताया गा
यत्रीसाररूपिणी याविद्यापरमालोके विश्वमङ्गल
दायिनी चतुर्विंश्यात्तरी विद्यापरमार्थाधिदेवता
गायत्री त्रिपदीनाम्नी वेदमाताजगत्प्रसूः तस्यानाम
सहस्रं ते सदसद्ब्रह्मसाधनं पुण्यं पवित्रमायुष्यं सर्व

देवनमस्कृतम् ब्रह्मादिपूजितंनित्यं मंत्रनामसहस्र
कम् अस्यश्रीगायत्रीमंत्रनामसहस्रस्य सदाशिव
ऋषिः त्रिष्टुप्छंदः श्रीपरमार्थगायत्रीदेवता ऐं
बीजं श्रींशक्तिः मैंकीलकम् आत्मनो धर्मार्थ
काममोक्षार्थे होमेविनियोगः ध्यानम् ॐमु
गा· क्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्यु
स्वा· क्तामिंदुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिका
१

मू ॥ गायत्रीवरदाभयांकुशकरं शूलंकपालंगुणं
शंखंचक्रमथारविंदयुगलं हस्तैर्वहंतीभजे आया
तुवरदादेवी ७ ॐत्रिपदेस्वाहा त्रितयेस्वाहा न्य
स्यै वेदमात्रे श्रुतिप्रियायै वेदगर्भै मंत्रमय्यै वेद
गर्भायै समानन्य सरस्वत्यै सतीमात्रे भूर्भुवः स्वाःस्व
रूपिण्यै सत्यासत्यवत्यै साध्व्यै सुधाकलसधारिण्यै
गोमत्यै ब्रह्मसर्वै ब्राह्म्यै ब्रह्मरूपायै परापरायै

पुण्यदायै मंत्रविद्यायै महाविद्यायै महेश्वर्यै व्या
हृत्यै सत्यलोकस्थायै ज्ञानदायै ब्रह्मवल्लभायै वटु
कायै वेणुहस्तायै महत्यै महतीतरायै मनोन्मनायै
मदत्तीवायै मधुरायै मधुराकृत्यै मनुप्रियायै विष्णु
मायायै वसुदायै वसुपूजितायै वामन्यै वीरसवे
गा· द्रोण्यै द्रोणीभृद्वल्लभायै वचायै वाराह्यै वनजा
स्ता· त्यै पद्महस्तायै सुरार्चितायै पद्मायै पीनस्तना
२

यै स्तन्याक्तनये केनाशनाशिन्यै सुंदर्यै सुंददैत्यघ्नै
कुम्पलांकुशधारिण्यै कुलेश्वर्यै क्रियाकीर्यै वागी
श्वर्यै वामवल्लभायै सुरासुरनतायै नीतये भीतिहा
यै भद्रदायिन्यै भद्रकाल्यै भोगवत्यै भास्वत्यै भास्व
राननायै पंचाननायै पविहस्तायै केयूरमणिमं
डितायै मनस्विन्यै मराल्यै मरालगत्यै ईश्वर्यै स
र्वेश्वर्यै सर्वमान्यायै सर्वपातकनाशिन्यै सर्वभू

नयधरा

नात्मभावाय्याये जगदानंदलोचनाये विश्वरूपाये
विधाये पूज्याये मान्याये महाशयाये कुलनयधरा
ये धन्याये महासमयमंत्ररूपे रत्ननयधराये धन्या
ये श्रेष्ठाये नियानोत्तमदेशिकाये अमोघपाशाये
विजयाये वज्रपाशमहाग्रहाये वज्रांकुशाये वज्र
पाल्ये वज्रभैरवभीमकाये सुविशुद्धये धर्मधाये
नेजोसि ज्ञानवेदसे ज्ञाननाथाये ॥१०॥ ध्यानम

मा॰
गा॰
स्वा॰
२

ॐ प्रातःकाले कुमारी कुमदकलिकया जप्यमालाजपंती मध्या
ह्ने प्रौढरूपा विकसितवदना चारुनेत्राविशाला संध्यायांवृ
द्धरूपा गलितकुचयुगे मुंडमालावहंती सादेवी दिव्यदेहा
हरिहरनमिता पातुनोह्याद्यमुद्रा ॥ॐ गदापहायै स्वाहा
क्रोधनायै षण्मुख्यै भीमायै षण्णेत्रायै षड्भुजायै ब
लायै दंष्ट्राकरालायै कंकालायै हालाहलमननानायै ह
संत्यै विघ्नशमन्यै वज्रवेगाभयंकर्यै विद्युत्वज्रायै ह
ह्ज्रायै मायायै वज्रमहोदर्यै कुलिशेश्यै वज्रयोन्यै १५०

वज्रमुंडाललद्युनये अचलै कजटाजटाये गजचर्मपटाट्ठ
हृष्ये हाहाकारमहाघोराये फीफीकारभयानकाये अट्टहा
साये महाहासाये वज्रहासाये महामय्ये वज्रसत्त्वाये महा
सत्त्वाये वज्रबुद्धये महालसाये वज्रदंडाये महामोदाये+
+वज्रबुद्धिनिकृन्तनाये विश्ववज्रधराये धीराये एकवज्र
रणजयाये वज्रज्वालाकरालाक्ष्ये वज्रवाण्ये भिलीभवा
ये वज्रवेशाये महावेशाये अनाक्ष्ये वज्रलोचनाये व
ज्ररोमांकुराये तन्ध्ये वज्रनाभ्योग्रविग्रहाये वज्रकोटि

वज्रहूंकारहुंकृतये + वज्रबाणायुधधराये+

गा. स्वा. ४

नरताये रम्भाये वज्रसाराये ज्ञानश्रुतये वज्रमालाधरा
ये अदीनाये वज्राभरणभूषिताये हाहाहूहासाये नि
र्हासाये निर्घोषाये वज्रघोषणाये षडन्तर्ये षोडश्ये
चतुर्विंशान्तरात्मिकाये मञ्जुघोषाये महानादाये त्रै
लोक्यैकवरप्रदाये आकाशधातुपर्यन्ताये घोषाये वे
दांगधारिण्ये भूतीस्थ्ये बुद्धमात्रे भूतहर्म्ये निरन्तराये
शून्यताये वृषभारूढये वृषध्वजकुटुम्बिण्ये गम्भी
राये ज्ञानमात्रे ज्ञानपूज्यान्तिगर्जनाये धर्मसंकाये म

वज्रहूंकारहुंकृतये + वज्रबाणायुधधरायै +

वज्रमुंडाललद्युतये अचलै कजटाजटायै गजचर्मपटाद्रु
हृष्ये हाहाकारमहाघोरायै पीपीकारभयानकायै अट्टहा
सायै महाहासायै वज्रहासायै महामख्ये वज्रसत्वायै महा
सत्वायै वज्रबुद्धये महालसायै वज्रदंडायै महामोदायै+
+वज्रबुद्धिनिकृन्तनायै विश्ववज्रधरायै धीरायै एकवज्र
रणजयायै वज्रज्वालाकरालाद्ये वज्रवाराये भिलीभवा
यै वज्रवेशायै महावेशायै भनाद्ये वज्रलोचनायै व
ज्ररोमांकुरायै नन्धे वज्रनाम्नोग्रविग्रहायै वज्रकोटि

नरताये रम्भाये वज्रसाराये ज्ञानद्युतये वज्रमालाधरा
ये अदीनाये वज्राभरणभूषिताये हाहाहूहासाये नि
हीसाये निर्घोषाये वज्रघोषणाये षडक्षर्ये षोडश्ये
चतुर्विंशात्तरात्मिकाये मञ्जुघोषाये महानादाये त्रै
लोक्यैकवरप्रदाये आकाशधातुपर्यन्ताये घोषाये वे
दांगधारिण्ये भूतीस्थ्ये बुद्धमात्रे भूतहर्म्ये निरन्तराये
शून्यताये वृषभारूढाये वृषध्वजकुडुम्बिण्ये गम्भी
राये ज्ञानमात्रे ज्ञानपूज्यातिगर्जनाये धर्मशंकाये म

हाभद्राये धर्मगुण्याये महामतये अप्रतिभिन्ननिर्वाणाये
दश्यादिग्धर्मडुंद्दभाये अरूपाये रूपवत्ये उग्राये नानारूपा
ये मनोमय्ये सर्वरूपावभासाये श्रिये अमेघप्रतिविंभधृ
ते अप्रधृष्याये महाधृष्याये महाअंकाये अंखिन्ये डा
किन्ये हाकिन्ये लंपाये तेजोसि जातवेदसे चंपाये ३॰॰
गा· ध्यानम् ॥ ॐ गायत्रीं त्रिजगन्नुतां हंसभुजां कौयूरहारा
स्वा· न्वितां वस्त्रैः पञ्चभिर्भूषितां त्रिनयनां सर्वायुधैः संयुता
८ हंसस्थां वृषवाहनां खगपतामानन्दितां मुक्तिदां ब्रह्मा

विष्णुमहेश्वरादिभिस्तुतां वंदे त्रिरूपान्विताम्   चम्पकसन्नि
भायै समुद्भिन्नार्कबिंबस्यायै धर्मकेतवे महोदयायै त्रिव
र्णायै सकुमारांग्यै स्थविरायै स्थानसुन्दर्यै वृद्धायै प्रजा
वत्यै प्राज्ञायै द्वात्रिंशल्लक्षणाश्रयायै कांताननायै कीर्त्ति
धरायै क्रूरायै त्रैलोक्यसुन्दर्यै लोककान्तायै गुणाचार्यायै
सुराचार्यायै गुणेश्वर्यै वामाचारप्रियायै हृन्नयै लोकाचा
र्विशारदायै शरदायै शूलहस्तायै शरणायै रणदुर्जया
यै गगनाभोगसंभोगायै त्रिलोकजननीप्रियायै सर्वज्ञा

ये सर्वलोकस्यायै सर्वज्ञज्ञानदायिन्यै अविद्यायै चंडके
शस्यायै भवपंजरदारिण्यै अमित्ताऐ सर्वक्लेश संसारार्णव
पारगायै ज्ञानाभिषेकमुकुटायै संम्यकंबुद्धभूषणायै त्रि
दुःखदुःखशमन्यै अंनानंतायै त्रिमार्गगायै सर्वाभरणवि
मुक्तायै आकाशमहत्तांगनयै सर्वक्लेश महानीतायै त्रिध्वा
गा· नायै त्रिध्वानाध्वांतनाशिन्यै सर्वसत्तायै समाधिस्थायै
सा· गुणाश्वेश्वरश्वरायै सर्वोपाधिविनिर्मुक्तायै व्योमवर्त्म
६ निसुस्थितायै महाचिंतामणिधरायै सर्वलोकोत्तमोत्तमायै

महाकल्पनसस्फीतायै महाभद्रायै वटोत्तमायै सर्वतत्वार्थवृ
त्तास्थायै दिनश्रियै सर्ववत्सलायै शुभाशुभज्ञायै कालज्ञायै
समयज्ञायै समयस्थितये सर्वेन्द्रियायै वलज्ञायै विमुक्ति
यकोविदायै गुणत्रय्यै वेदभाषायै धर्मज्ञायै अर्मदायिन्यै
प्रशस्तायै मंगलामुद्रायै सर्वमंगलकारिण्यै मंगल्यायै की
र्तिदायै लक्ष्म्यै यशोधायै यशस्विन्यै महोत्सवायै महा
श्वासायै महानंदायै महामतये सत्कारायै सच्चेतये भूत
ये प्रमोदश्रियै यशोधरायै वरेण्यायै वरदायै प्रष्यायै श
रण्यायै शरणोत्तमायै मा[illegible]मायानिशमन्यै दमन्यै देव

वत्सलायै चपलाक्ष्यै कोटराक्ष्यै पद्माक्ष्यै पद्मभूषणायै त्रि
खंडिन्यै तेजोसि जातवेदसे ॐ अग्निशिखज्योतिषे स्वाहा ॥ ३०॥
ध्यानम् ॥ ॐ सैषाधीरयनसारयोदेवि ह्यावस्यप्रद्दियंजनस्य
सर्वेतुसभंलिमदवरोदर्भ्येयोगोत्सयंद्विभुजायाह्वोपधिभ
वोतुम् ॥ अग्निशिखवाहननंदितायै स्वाहा नन्दिन्यै वंदितुत्य
यै स्वाहा जटिलायै कुटिलालकायै किरीटिन्यै वज्रिण्यै
गदिन्यै पत्रिण्यै कांच्यै पुर्यै काञ्चनवर्णाभायै काञ्चीध्व
निनिनादिन्यै हारिण्यै तारिण्यै तारायै नीलायै नीलपता
किन्यै नीलवर्णायै नीलकान्त्यै नलिन्यै नलिनालयायै

महाव्रतधरायै मौञ्जीव्रतस्थायै ब्रह्मचारिण्यै महातपा
यै तपोनिष्ठायै स्नातकै ब्रह्मवर्धन्यै निर्वापणप्रदायै मु
क्तै सौख्यदायै दुःखहारिण्यै कारिकायै धारिकायै सी
तायै भ्रांतिदायै भ्रांतिहारिण्यै सुखदुःखप्रदायै शांत्यै
निरालोकायै निरालयायै निःशेषपापहायै पीनायै कृ
शायै पूतनायै प्रज्ञायै सूक्ष्मायै स्थूलायै सूक्ष्मबीजायै
स्थितये स्थूलाकृतये सितायै विभामत्यै महालक्ष्म्यै रा
ज्यलक्ष्म्यै वषंकरै किंकर्यै कुंकृतये विद्यायै ब्राह्मण्यै
ब्रह्मपूजितायै नारायण्यै चामुण्डायै मुण्डहस्तायै कृ

पालिन्यै आंभव्यै कम्बुकण्ठ्यै नीलकण्ठ्यै नयोत्तमायै वा
राह्यै वरारोहायै नारसिंह्यै अपराजितायै कौमार्यै कुल
चक्रस्थायै कौलिक्यै कुलदेवतायै कुलवागीश्वर्यै वाल्यै
कुंदर्यै कुहकेश्वर्यै विज्ञानधर्मतातीतायै ज्ञानहृदयपद
स्थितायै निर्विकल्पायै निराभोगायै तथागतवरप्रदायै
अनादिबोधनायै प्रीत्यै आदिबुद्ध्यै निरञ्जनायै ज्ञानच
गा· चक्षुषे अमलायै ज्ञानमूर्तये ईश्वर्यै भोगेश्वर्यै महाभो ४०७
स्ता· गायै वादिसिंह्यै तेजोसि जातवेदसे मृगतृष्णायै ॥२०॥
८ ध्यानम् ॥ ॐ चतुर्भुजामर्कसहस्रकोटिभां त्रिलोचनां हा

रकिरीटयोभिताम् चतुर्मुखांकोपगतां महोज्वलां वेदी
श्वरींपंचमुखींनमामि ॥ सामंतसर्वेद्रासाध्यायैस्वाहा तेजो
मलायै सुदर्शनायै दुर्धर्षायै देवक्यै दांतायै दुर्दमायै
दुरांतनयै श्रीवत्ससुभगायै भीत्यै हारकेयूरभास्वरायै भा
स्वद्विलोचनायै भार्ग्यै भर्गपत्न्यै भृगुप्रियायै महाभिषचि
कित्सायै वेदसारवापुमापि थिन्यै प्रथायै प्रमथमात्रे प्र
मथाधिपवल्लभायै रोगहृत्कल्पवल्ल्यै वराभयकरायै
सभायै विभाविभावरीवृत्त्यै वृत्तत्रयसमुज्वलायै अभे
षभेषण्यलतायै क्लेश्मव्याधिहराक्रियायै क्रियावत्यै नु

या॰

त्यै चर्चायै दानवेश्यै दूत्यै त्रैलोक्यवशिन्यै दुर्गायै दुर्गम
यै निर्गमाश्रयायै नक्षत्रमण्डलद्योतनायै त्रैलोक्यतिलको
ज्ज्वलायै दशदिग्व्योमपर्यन्तायै धर्मध्वजमहोच्छ्रयायै
जगच्छत्रैकविपुलायै मैत्रीकरणमण्डलायै पद्मायै नंद
श्यै नंद्यायै नंद्यावर्तपदोज्ज्वलायै रत्नच्छत्रायै र
त्नकांच्यै रत्नपीठनिषेदुष्यै सर्वसिद्धिप्रदायै स्वाध्व्यै स
गा॰ र्वदैत्येन्द्रशासनायै रत्नसिंहासनस्थायै रत्नकुण्डलम
स्वा॰ ण्डितायै मायाजालहरायै मायायै जालंधरनिवासिन्यै
४ उड्डीयानपदस्थायै सर्वपीठकृतालयायै मूलाधारस्थि

नसाध्यै माध्वीरसविघूर्णितायै स्वाधिष्ठानेश्वरीदेव्यै ना
मणिपूरनिवासिन्यै धुनाहताप्रियायै हेत्यै विशुद्धपद
नायिकायै आज्ञाचक्रस्थितादेव्यै नवचक्रेश्वरीश्वर्यै चंच
रीकमलनालापायै चक्रनायकपूजितायै ब्रह्मरंध्रस्थिता
यै श्यामायै परंब्रह्ममयीवियदे आनंदनिलयानंतायै
स्वदेव्यै भैरव्यै भ्रूकुटीभुवे महोजस्कायै साधकेश्वरपूजि
तायै आनंदभैरव्यै काल्यै महाकाल्यै कुलाम्बिकायै वि
शुद्धधर्मनैरात्म्यायै सम्यक्ज्ञानेन्दुहृत्प्रभायै अशेषवज्र
पर्यङ्कायै निःश्लेषमणिभूषणायै सामंतभद्रवंशेश्यै वि

यास्त्रिपुरभैरव्यै ऐन्द्र्यै बिंदुबिम्बस्थायै महात्रिपुरसुंद
र्यै जगन्मात्रे जगद्धात्र्यै जगद्गर्भायै जगज्जनयै विश्वसृ
जे विश्वहृद्यै विश्वायै विश्वंभरसमर्चितायै विश्वाध्यायै
विश्वधर्मस्थे विश्वनायकवल्लभायै वाराणस्यै मधुपु
र्यै द्वारिकायै अवंतिकायै वियद्गङ्गायै वियन्नदीनाद
यै विद्यायै नादाम्बिकायै तेजोसि जातवेदसे रमायै
गा· ध्य··॥ध्यानम्॥ ॐ मनुष्यास्तिर्यञ्चो मरुतन इति लोकत्रितय
स्ता· मिदं भवांभोधौ मग्नं त्रिगुणलहरीकोटिलुठितम् कटाक्षै
१० चेदत्र क्वचन तव मातः करुणया शरीरी सद्योयं व्रजति

क्व

परमानंदतनुताम् १ त्रिनादायै त्रिस्वरायै त्र्यक्षायै नादजायै
नादवैन्दव्यै एकविंस्यात्तरीविद्यायै त्रिववामांगवर्तिन्यै स
प्रपानालनिर्ण्यायै सर्वलोकेश्वर्यै सरिते महाप्रज्ञापारमि
तायै मीमांसायै पंचमप्रियायै मीनमांसाशनायै गौर्यै सु
रासर्वविनादिन्यै वैष्णव्यै तर्कसारज्ञायै सर्वधर्माववोधि
न्यै मीनात्मजायै मीनमूर्तये मैनार्कशरणप्रदायै त्रिमि
नायै सुप्रसन्नात्मने परमात्माववोधिन्यै ज्ञानार्चिषे वी
रपूज्यायै वीरपानातितोषितायै वीरचक्रेश्वरीवंद्यायै
महाचक्रकर्मेश्वर्यै इष्टार्थसाधनसंपदे सर्वपापविमो

धन्यै सर्वसत्वोत्तमायै नाथैं नरनाशयलेश्वर्यै सर्वसत्वप्रमे
दायै औषदायै ऐश्वर्यदायिलायै स्मशाननिलयायै नित्या
यै कालभैरवपूजितायै देवेश्वर्यै ज्वलत्तेजायै ज्वलत्पाव
कसन्निभायै मुक्ताभरणभूषाढ्यायै विद्युन्मालंकृतायै न
डिते तडित्कोटिसमानास्यायै तारायै पंचदशेक्षणायै जं
बूनदासनस्थायै स्वर्णकंकणराजितायै अनर्घमणिसम्पू
गा· र्णकिंकिणीजालकूजितायै पिकस्वनायै घोरनादायै हं
स्वा· सोहंसस्वरूपिण्यै अज्ञानभंजनीशक्त्यै निःशेषरिपुद
११ र्पहायै श्रृंगारधराधियै अज्ञायै सर्वश्रृंगारशोभितायै

बीभत्सायै साधकप्रीतायै साधकारिविनाशिन्यै साध्यसिद्धये
सिद्धिसिद्धै अभिभावनिकृंतनाय बाहुदण्डअनन्तेपापदनि
लेपनर्तिन्यै नरिन्यै नारिकुमलायै रमण्यै वामनार्चितायै
बलिदर्पहरायै बालायै नटनर्तकवंदितायै श्रीमच्छतभुजा
भोगगगनाभोगनर्तनायै एकपादतलाक्रांतमहीमण्डलमध्य
गायै ब्रह्माण्डशिविराक्रांतपादांगुष्ठनखस्थितायै एकार्था
द्वयधर्मार्थायै वादनिर्णयकारिण्यै विशिष्टधर्मकर्मश्रियै
कर्मबंधनिकृन्तनायै नानाविज्ञप्तिरूपार्थपरमार्थाववोधि
न्यै चित्तसंतोषरूपायै चित्तविज्ञानसंतत्यै अशेषभावार्थग

नये शून्याशून्यात्मय चिन्ताये चिंतानलोग्रज्वालास्याये ज्वाला
ये ज्वालामुख्ये जराये तरुण्ये करुणाक्रांताये संक्रान्त्ये सूर्यो
बगाये सूर्यकोटिसमानाभाये पुराकुण्डलिन्ये क्रौंहे भावरा
गाद्युतीनाये भवत्रयसदागतये शुद्धशुभ्राभ्रधवलाये श्वे
चंद्रांशुस्वप्रभाये बालार्कमण्डलच्छायाये वैडूर्यमणिस
च्छायाये पद्मरागनखप्रभाये इंद्रनीलाग्रसच्छाये महा
नीलकाचच्छवये महामणिमयूखविग्रहे तेजोसि जातवेद
गा॰ से चीनांबरविभूषणाये ६०॥ ध्यानम्॥ ॐ पिता माता भ्रा
स्वा॰ सुहृदनचरः सद्म गृहिणी वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा मां
१५ विजहति तदा मे बिंदाना सपदि भयमोक्षाधनमसे महाज्वे

ने स्तेमान भेव कल्लणया सन्निधकरी ॥ ॐ लोकधातुमनन्तरूपा
यै स्वाहा ऋद्धिपादमहाक्रमायै महास्मृतिधरायै ध्येयायै
स्यात्तमार्गप्रवर्तिन्यै मुनिसंपूजितामुद्रायै मुनीस्वरवरप्रदा
यै मारमोहमहाक्रान्तायै मारसवे मारघातिन्यै चतुःस्मृति
समाधिस्थायै नानाकुसमशोभितायै वसन्तकुसमस्कायायै
ग्रीष्मातपविनोदिन्यै वर्षायै वर्षीयस्यै ज्येष्ठायै कनिष्ठायै
शरदाश्रयायै हेमाभायै शीतलायै हेमज्योतिषे ज्योतिवि
दीश्वर्यै वेदविद्यायै ज्वालन्त्यै हृदन्त्यै समुत्वोधधये ऋग्री
घधीश्वकिरीटायै दधीचिवरदायिन्यै अरुंधत्यै अरुणाभासा
यै वरुणेश्वरपूजितायै वायुसवे वायुरूपायै पंचभूतेश्वर्यै

श्रुतये पंचप्राणायै पंचहविषे पंचबाणायुधारूचये अष्टांग
मार्गनयधियै पार्वत्यै पर्वताश्रयायै सर्वसत्त्वामहासंगायै
निःसंगायै गगनोपमायै सर्वसत्त्वमनोजातायै सर्वसत्त्वमनो
जवायै सर्वसत्त्वेन्द्रियाज्ञानायै सर्वसत्त्वमनोरमायै पंचस्कं
दार्थनत्त्वज्ञानायै पंचस्कंधविशुद्धहृदये सर्वनिर्वाणकोटि
स्थायै सर्वनिर्वाणकोविदायै सर्वशास्त्रप्रतीतिस्थायै सर्व
शास्त्रार्थगोपितायै द्वादश्यै एकादश्यै पूर्णायै नवम्यै नव
गा· योनिजायै अष्टज्ञानावबोधायै चतुःसत्यनयाक्रान्तये अष्ट
स्वा· म्यै पंचम्यै पारायै चतुर्दश्यै अष्टमूर्तिधृते द्वादशाकारस
१३· त्यार्थायै षोडशाकारतत्त्वधृषे विंशत्याकारसंबोधये स

मुद्राक्षोभकारिण्यै समुद्रतनयायै स्वांगायै समयाचारवल्लभा
यै नानानयनयोपायजगदर्थविभावुकायै क्लेशहरायै अश्वशीर्ष
स्थायै अश्वयायिसमुद्भूतायै गोमयायै परगतये योगकांतारत
ये हृतायै सर्वभावात्मने अश्विन्यै याम्यायै कृत्तिकायै अम्बर
भूषणायै रोहिणाचलवासायै रोहिण्यै अकटाचिन्तायै मृगमू
र्धायै पंचमूर्धायै पूतायै सान्द्रायै वियोगिन्यै लोकवसुप्रदायै
पुष्यार्थे विभवप्रदायै सर्पजायै सर्पहाश्लेषायै मघामघफल
प्रदायै पूर्वफाल्गुणघसद्रूपायै सोत्तरायै हस्तविस्तृतायै चित्रा
स्वरधरायै स्वात्यै विशाखातिप्रियायै प्रसवे तेजोसि जातवे
दसे मैत्रदेव्यै ॥७००॥ ध्यानम् १ ॐ यत्त्वष्टपत्रंकमलमुदितंत

स्वयाकर्णिकाख्या योनिस्तस्याःप्रथितमुदरे यत्तदोड्डारपीठ
म् तस्मिन्नंतःकुचभरनतां कुंडलीतःप्रवृत्तां श्यामीकारांस
कलजननीं संततं भावयामि ॥ मित्रमैत्र्यै ज्येष्ठान्वयव्रतस्थि
तघ्ने मूलांकुरायै मूलमख्यै पूर्वोत्तरगतये सत्यै श्रविष्ठायै
अभिजिते जेत्र्यै धनिष्ठायै धनदस्पर्शै शतबाहवे शताकारा
यै शतशीर्षायै शतभिषजे पूर्वभाद्रपदायै उत्तरभाद्रपदा
यै रेवत्यै रमणप्रियायै अनंतवसत्यै नागायै आद्यायै आव
गा॰ शगोचरायै आदित्यजनन्यै दैत्यविध्वंसिन्यै आदित्यदेव
स्ता॰ तायै इलायै ईश्वरवक्षस्थलायै ईशानायै कामनार्थदायै
१८ उर्व्यै उमायै ऊष्मायै ऊर्ध्वरोहायै पोषणायै ऋॠऌॡचीं

नपस्रायै सव्याचीनकुलेश्वर्यै एनांकबिंबवदनायै ऐकारान्तर
वीजिन्यै ओंकारवेदतत्वाढ्यायै औन्मवीरवगपूजितायै संभ
सुरनिसुंभ घ्न्यै अकारवपुष्यै वध्वै कामदेवकलाक्रान्ता
यै क कनकांगद मण्डितायै कुब्जिकायै कोमलांग्यै कोपरा
यै कोपनाग्निन्यै कुम्भसम्भवकरायै कारासृंखल्यै कनकप्रभायै का
खचर्यै खड्गधरायै खंजनाक्ष्यै खलान्तकायै खिटेश्वर्यै खे
टकायै खट्वांगमुसलायुधायै गजास्यजनन्यै गीत्यै गंधर्वकु
लनंदिन्यै गूर्जर्यै गारुडीविद्यायै गोडजायै गरुडप्रसवे घन
वाहनपूज्यायै घनसारातिवासितायै घनेश्वर्यै घनश्या
यायै घुर्घरारावभीषणायै जाताचन्द्रकलायै चांड्यै चंच

स्वल्पकभूषणायै चकोरनयनायै चार्व्व्यै चंद्रिकाचामराञ्चित
यै छत्रशोभायै राजमान्यायै छिन्नमस्तायै छुलापहायै
जगद्धात्र्यै जगत्सिद्ध्यै जागन्तुकसमछवयै जाग्रतयै जगद्यो
नयै जगद्विजयदायिन्यै ज्ञांकारिण्यै झलरिण्यै । ज्ञानुरूपायै
परांबिकायै टंकयुधायै टीङ्कारायै ठक्कुर्यै ठन्नयोज्वलायै
डिल्यै डिलीट्ठवर्णाच्यै णीमीयायै णयोज्वलायै ताप्यै ताप
त्रयहरायै तापिन्यै तपनद्युतयै तालायुधायै तमोहन्त्र्यै ताम
गा· रसप्रभानस्यै स्थूलाङ्गनयै स्थूल्यै घ्रुल्यै तेजोसि जातवेदसे
स्तो· दत्तजायै ८०० ॥ध्यानम् ॥ ॐ अजानंतेनायांतितयमवस्थमन्वो
१८ न्यकलहे रमीमायाग्रन्यो नवपरिस्तुतंनः समर्थिनः जगन्मा

नर्जन्मजन्वरभयतमोः कौमुदिवयं नमस्तेकुर्वीलः अरलमुपया
मोभगवतीम १ देवनायकै देवेन्द्रतनयायै दत्तायै दत्तपुत्र
विनाशिन्यै धर्मजायै धनदायै धर्म्यायै धर्मकर्मफलप्रदायै
धाच्यै धनेश्वर्यै धारायै धर्मकर्मविचक्षणायै नवपात्रधरा
यै नक्षै नगजायै नागकन्यासित्यै नागयज्ञोपवीतायै नर्म
दाख्यै नरसुंदर्यै नंदजायै नंदिसेव्यायै नारदर्षिसमर्चि
तायै पामर्यै पीवरांसायै पक्ष्मल्यालायै पिलम्पिकायै
पारीरद्रुमवल्ल्यै पाटलीकुसमप्रभायै पट्टाम्बरधरायै
पुण्यायै पूर्वापुर्यै पौरपूजितायै फलदायै फलहस्तायै ब
लिहस्तायै बलिप्रियायै बालकेहायै बिंभोष्ठ्यै बलारा

तिवरप्रदायै भद्रिकायै भीमवपुष्यै भगावासायै भगालयायै
भर्गप्रियायै भाग्यदात्र्यै भगबिंबनिवासिन्यै भाषायै भवप्र
भायै भगरूपायै भगार्च्चनायै माधव्यै मधुरायै मायायै मान
दायै मधुरस्वनायै मर्त्यलोकस्थायै मेध्यायै मधुमत्तायै म
धुप्रियायै मासिक्यै मदनप्रीदायै यशोदायै यतिरणीयुत
यै यतेश्वर्यै यत्तधात्र्यै यजुर्वेदार्थसूचिनायै याज्ञिक्यै य
जमानप्रियै रत्नाकारसुताचर्यै रम्भोपमोरवे रतेश्वर्यै पंच
गा॰ रत्नेश्वर्यै रुचे रुरुभैरवसेव्यायै रतिदायै रतिनोषितायै र
स्वा॰ तोभवायै रजोभूतायै राजस्यै रजस्वलायै लंबोदर्यै ललाल
१६ नायै लूतातंतुवितानितायै लंकाललनायै लटाचलल

का१

लनायै ललनाबीजभूषितायै वरारोहायै वरधरायै वरेण्या
यै वराङ्गागायै वस्त्रप्रियायै वस्त्रहीनायै वस्त्रालंकारभू
षितायै बीजमयीवाग्ये आ[illegible]रीविद्यायै आवलोचनायै
अरविंदकलोत्तमायै अतचंद्रसमाननायै अतलोमायै अ
मीआरवायै वेदआरवायै अच्छे अशुभायै षट्कूटायै षडषीत्य
र्णायै षड्भुजायै षोडआनर्घै तेजोसि जानवेदसे सत्यास
त्यप्रियायै ॥ १०००॥ ध्यानम् ॥ ॐ अनंतावहे वासवगपरिषदो
वायदग्धनं कदाकेन क्वेति क्वचिदपिनकश्चिन्कलयति अस
ष्मिन्निस्मां विजहिहि मम महामवपुषि प्रपद्येथास्तेनः स
कलजननीमेवश्चरणाम् ॥ नीतायैसाहा सात्त्विके भाववर्जि

तायै स्वाहा सरस्वत्यै रम्यायै सारस्यै स्वरवंदितायै नित्यं
समस्तशुभदायै समस्तरोगपूजितायै समस्तबीजनिल
यायै हरीश्वान्यै हरार्चितायै हाटकेश्वरसेव्यायै हाला
पूर्णितलोचनाय हेलाहेषाहारिण्यै हव्यभुग्वल्लभायै
हरिते हीररश्मिमयूखविग्रहे हकारान्तरमातृकायै लु
ते लपायै लरिकायै लीवायै लणदायै लललोषितायै
लंतःस्वरूपिणीदेव्यै हंसशक्तिस्वरूपिण्यै अकारादि
गा॰ कारांतशिवशक्तिस्वरूपिण्यै अनन्तरामंत्रमध्ये मंत्रय
सा॰ न्त्रे अयोनिजायै कुलमंत्रेश्वर्यै कुल्यायै महामंत्रकुल
१८ त्रैव्य सर्वमंत्रार्थजनन्यै महाचक्रेश्वर्यै वेनतये पंचाव

र्थै महाशून्यायै बिंदुशून्यायै षडन्तर्थै द्वाविंशोत्यन्तरीविद्या
यै श्रीचतुर्विंशदन्तर्थै सर्वोत्तरायै निराकारायै षोडशा धा
र्थवाहुधृते अकलायै कलनातीतायै ध्यानातीतायै परायै
प्रसवे सर्वध्यानकलाभिज्ञायै समाधिकुलनायकायै समा
धिकार्यकायायै अग्न्यायै नित्यकार्यक्रमेश्वर्यै दशदिशे वि
श्वनिर्माणायै जगज्जन्मलयंकर्यै देवादिदेववंदेवश्यै दानवे
न्द्रसमर्चितायै महिषासुरदर्पघ्नै रक्तबीजविमर्दिन्यै अस
नीराननवे त्रयीनतुसमाननायै भवकांनारोत्तीर्णायै कां
तारनिलयायै हंसायै प्रत्यानदस्पदिगवर्णायै वर्णेश्वर
वर्तिजायै सृष्टौ नटिन्यै वेश्यायै मंत्रपूजाफलप्रदायै र

जक्षै राजपत्न्यै मालिन्यै नापितांगनायै धर्मिण्यै धर्मसीमा
यै निस्त्रिंशोज्वलसमस्तकायै सदानंदमयीमूर्तये स्वयंभुवे
कुसुमार्चितायै सुकार्चितायै लिंगमूर्तये भगमूर्तये निरा
तये भगलिंगायै अमृतमय्यै चतुर्मयीमूलविद्यायै सावित्र्यै
वरेण्यायै आद्यादेव्यै भर्गमय्यै भगायै देवस्यवल्लभायै वाचे
धीमहै धीमहीहिप्रियायै धियोयोन्यैः ईनतेतायै सद्
विद्यायै प्रचोदिन्यै ॐसौः ह्सौंः ऐं क्लीं ह्रीं स्त्रीं भें ग्लौं वेदवल्ल
गा॰ भायै ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं स्त्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं परमार्थाधिदेवतायै स्वा
सा॰ हा ॥तेजोसि जातवेदसे ॐ सौः ह्सौं सौः स्त्रीं स्वाहा गायत्र्यै मो
१८ ददायिन्यै स्वाहा ॥१००॥ इतीदं देव्या गायत्र्या मंत्रनामसह

सकलं चतुर्वेदागमोद्भूतं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् सारं सर्वस्वभूतं मे
रहस्यं त्रिदिवौकसां पुण्यं यशस्करं दिव्यं सर्वसारस्वतप्रदम्
ब्रह्मोत्पत्तिकरं ब्रह्मसाधनैकरसायनम् कारणं सर्वसिद्धीनां
त्रिपदीनत्त्वमुत्तमम् सर्वपापप्रशमनं महापातकनाशनम्
यः पठेत्पाठयेद्वापि ॥ शृणुयाच्छ्रावयेदपि सायुज्यः पुरःपु गा॰
त्रो लक्ष्मीवानपि जायते यः पठेत्सततं राज्ञौ शुचिर्वाप्यथवा
शुचिः शुद्ध्या शुद्ध्या वापि संभवेद्भैरवोपमाः योर्थकामोप
ते जन्मसाफल्यमाने वा चिन्ताग्रतः तस्य गेहे निधानानि भवि
ष्यंति पदे पदे यः पठेद्भौमवारे तु प्रयतः शक्तिसन्निधौ श्री
चक्रं पूजयत्वादौ वामाचारपरायणाः तस्याशु रत्नपीठस्या

चतुर्मुखसमन्वित्विन्नितादेवीपंचमुखीस्वप्ने सांगाप्रादुर्भविष्य
ति यः पठेद्वटमूलेतु दशावर्तमहस्रुरि बधिरोव्यादिपङ्गु
र्वा कारणतो बंधएवच कुष्ठीवाद्वित्विकौदेवि सरोगात्सु
च्यतेक्षणात् शूद्रोवाब्राह्मजातीयः क्षत्रियोवावराननेयः
पठेदष्टवारंतु सभवेद्दीक्षितोत्तमः यःपठेच्चत्रपूजायासा
धकोवीरपावभृत् सन्द्रोचीनक्रमोद्योगी सभवेद्ब्रह्मवल्ल
भः यःपठेच्छ्रमनावर्ते सालिग्रामशिलाग्रतः विष्णंसपूज्य
गा. कुसुमैर्नैवेद्यैश्चसहस्रः वीरानंदमयोमंत्री वीरभक्षणतत्प
स्त. रः सामवेदरिकातारः शाक्ताग्निवैष्णवोत्तमाः यःपठेद्देविस
१५ प्ता प्राहमेकभक्तो जितेन्द्रियः कुश्रास्मरणसंविष्टः देनावा

र पराणि भि प्रत्यहं न स्युगायत्रीवरदादस्यैनप्रदा रवौ सु
भर्द्दे संयुक्ते लिखे भूर्ज्जे महेश्वरी अष्टगन्धेन संयुक्ते यंत्रे
मूलविद्यां लिखेत्ततः ततो देव्याः सुगायत्रीमंत्रनामसह
स्तकम् विलिख्य विधिवज्जप्तासेन सूत्रेण वेष्टयेत् रक्ता
मूलमयीदेवि पूजयेद्यंत्रराजवत् धारयेद्दक्षिणे बाहौ योषि
द्वामकरे तथा वंध्या न लभते कामं यद्यन्मनसि वांछतम् वं
ध्या लभेच्छुभा पुत्रान्सा नाहै श्रवणोपमान् मार्काया पुष्प
पुत्रा मृतवत्सा चिराच्छिवे काकवंध्या लभेत्पुत्रं कामदे
वोपमं स्त्रिया मूको लभेच्छुभां वाणीं निर्धनो धनमाप्नुयात्

ॐ श्रीदेव्यै नमः ॥ ॐ अधुना

मंत्रनामसहस्रस्य पठनादभूमिसिद्धिदात्र्यम्बकस्य हरेश्चानि
वश्याह्यस्येच सिद्धयः नृपादास्तत्वमायांति वश्यांतस्य सुराद
यः देवाअप्सिवश्यमायांति नामयक्षास्त्रकिंनराः अर्धरात्रेपठे
न्नित्यं सहस्रंव्यात्तयांतरे जपेन्मूलंयथाशक्त्या पठेदुर्गेस
गा· माहितः स्तमेम्मयेस्मुडकाचार्यो न्मोहयेद्भुवनत्रयम् वश्य
येत्वावयावेदे विभारयेन्मृत्तिएवच आकर्षयेद्देवकन्यागं
धर्वकस्तथा उच्चाटयंतिशत्रूणां कुलंहरेपिसंस्थितनाः वि
गा· द्वेष्य इतिसयोगी मययेद्वाप्युपद्रवान् योषयेन्देवतापितृ
स्तो· न्मोचयेद्बन्धनात्सर्वान् बहुचोक्तेन किंदेवि नाम्नांसहस्र
२० कस्यच यजेद्धवनेनेनस्य भुक्तिमुक्तिकरास्थिता एकवारंप

देहस्त्र स्मृ एव याह्वा स्मृणोति वा ब्रह्महत्या भ्रूणहत्या मातृपि
तृबुधस्तथा गुरुहत्या सुरापानं गुरुतल्पगतोद्भवम् पातकं न
स्तणान्त स्थे हिमवद्गास्तरोदये नगोऽस्याः परो मंत्रो मुक्तिदान
तमःशिवे तस्माज्जपेन्मनुं देवि गायत्र्याः परमार्थदम् सब्रह्म
यो जपेन्नित्यं तरीं त्रिपदां परां सम्यक्तो यो जपेन्मंत्री गुरुवक्त्रा
द्धृतं मनुम् गुरुं ध्यात्वा जपेद्धि यो पठेन्नामसहस्रकम् इह लो
के श्रियं प्राप्य मृत्यु मोक्षमवाप्नुयात् इति नामसहस्रेण सर्वागम
रहस्यकम् चतुर्वेदैकसर्वस्वं गायत्रीनाममुत्तमम् न वक्तव्य
म्भया रव्यातं दुर्लभं त्रिदिवौकसाम् अप्रकाश्यमदातव्यं गोपनी
यं स्वयोनिवत् ॥ इति श्रीरुद्रयामले तंत्रे श्रीगायत्रीरहस्यमंत्रनाम
सहस्रकं समाप्तमिति यदराह्वेर्लिपिः ॥॥॥